

أَمْثُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ٢٥

लाए और अच्छे काम किये उन के लिये वोह सवाब है जो कभी खत्म न होगा

آيَاتُهَا ٢٢ ﴿١٥٥﴾ سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ ٢٢ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١

सूरए बुरुज मक्किय्या है, इस में बाईस आयतें और एक रकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ١ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ٢ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ٣

कसम आस्मान की जिस में बुरुज हैं² और उस दिन की जिस का वा'दा है³ और उस दिन की जो गवाह है⁴ और उस दिन की जिस में हज़िर होते हैं⁵

قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ٤ النَّارِ ذَاتِ الْوُقُودِ ٥ إِذْهُمْ عَلَيْهَا

खाई वालों पर ला'नत हो⁶ वोह उस भड़कती आग वाले जब वोह उस के कनारों पर

1 : "सूरए बुरुज" मक्किय्या है, इस में एक रकूअ, बाईस आयतें, एक सो नव कलिमे, चार सो पेंसठ हर्फ हैं। 2 : जिन की ता'दाद बारह है और इन में अजाइबे हिक्मते इलाही नुमुदार हैं, आपताब महताब और कवाकिब की सैर इन में मुअय्यन अन्दाजे पर है जिस में इख़िलाफ नहीं होता। 3 : वोह रोजे क्रियामत है। 4 : मुगद इस से रोजे जुमुआ है जैसा कि हदीस शरीफ में है। 5 : आदमी और फिरशते, मुगद इस से रोजे अरफ़ा है। 6 : मरवी है कि पहले ज़माने में एक बादशाह था जब उस का जादूगर बूढ़ा हुवा तो उस ने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज जिसे मैं जादू सिखा दूँ, बादशाह ने एक लड़का मुकर्र कर दिया, वोह जादू सीखने लगा। राह में एक राहब रहता था उस के पास बैठने लगा और उस का कलाम उस के दिल नशीन होता गया, अब आते जाते उस ने राहब की सोहबत में बैठना मुकर्र कर लिया, एक रोज़ रास्ते में एक मुहीब जानवर मिला, लड़के ने एक पथर हाथ में ले कर येह दुआ की, कि या रब अगर राहब तुझे प्यारा हो तो मेरे पथर से इस जानवर को हलाक कर दे, वोह जानवर उस के पथर से मर गया, इस के बा'द लड़का मुस्तजाबुद्दा'वत हुवा और उस की दुआ से कोढ़ी और अन्धे अच्छे होने लगे। बादशाह का एक मुसाहिब नाबीना हो गया था वोह आया लड़के ने दुआ की वोह अच्छा हो गया और अल्लाह तआला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा। उस ने कहा : तुझे किस ने अच्छा किया ? कहा : मेरे रब ने। बादशाह ने कहा : मेरे सिवा और भी कोई रब है ! येह कह कर इस ने उस पर सख़्तियां शुरूअ कीं यहां तक कि उस ने लड़के का पता बताया, लड़के पर सख़्तियां कीं, उस ने राहब का पता बताया, राहब पर सख़्तियां कीं और उस से कहा अपना दीन तर्क कर। उस ने इन्कार किया तो उस के सर पर आरा रख कर चिरवा दिया, फिर मुसाहिब को भी चिरवाया दिया, फिर लड़के को हुक्म दिया कि पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाए। सिपाही उस को पहाड़ की चोटी पर ले गए, उस ने दुआ की, पहाड़ में जलज़ला आया, सब गिर कर हलाक हो गए, लड़का सहीह सलामत चला आया। बादशाह ने कहा : सिपाही क्या हुए ? कहा : सब को खुदा ने हलाक कर दिया। फिर बादशाह ने लड़के को समुन्दर में गर्क करने के लिये भेजा। लड़के ने दुआ की, कशती डूब गई, तमाम शाही आदमी डूब गए, लड़का सहीहो सलामत बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा : वोह आदमी क्या हुए ? कहा : सब को अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल कर ही नहीं सकता जब तक वोह काम न करे जो मैं बताऊँ ! कहा : वोह क्या ? लड़के ने कहा एक मैदान में सब लोगों को जम्अ कर और मुझे खजूर के दुन्द (सूखे तने) पर सूली दे, फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर "بِسْمِ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِ" कह कर मार, ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा। बादशाह ने ऐसा ही किया, तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा, उस ने अपना हाथ उस पर रखा और वासिल बहक हो गया। येह देख कर तमाम लोग ईमान ले आए, इस से बादशाह को और ज़ियादा सदमा हुवा और उस ने एक खन्दक खुदवाई और उस में आग जलवाई और हुक्म दिया : जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो। लोग डाले गए यहां तक कि एक औरत आई, उस की गोद में बच्चा था, वोह ज़रा झिजकी, बच्चे ने कहा : ऐ मां ! सब्र कर, न झिजक, तू सच्चे दीन पर है। वोह बच्चा और मां भी आग में डाल दिये गए। येह हदीस सहीह है, मुस्लिम ने इस की तख़रीज की, इस से औलिया की करामतें साबित होती हैं, आयत में इस वाकिए का जिक्र है।

قُعُودٌ ٧ وَهُمْ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ٨ وَمَا تَقْبُوا

बैठे थे⁷ और वोह खुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे⁸ और उन्हें मुसलमानों का

مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ٩ الَّذِي لَهُ مُلْكُ

क्या बुरा लगा येही ना कि वोह ईमान लाए **اللَّهُ** इज्जत वाले सब खूबियों सराहे पर कि उसी के लिये

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ١٠ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ١١ إِنَّ الَّذِينَ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत है और **اللَّهُ** हर चीज़ पर गवाह है बेशक जिनों ने

فَتَوَالُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ

ईज़ा दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को⁹ फिर तौबा न की¹⁰ उन के लिये जहन्नम का अज़ाब है¹¹ और

لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ١٢ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ

उन के लिये आग का अज़ाब¹² बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ١٣ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ١٤ إِنَّ بَطْشَ

बाग हैं जिन के नीचे नहरें रवां येही बड़ी काम्याबी है बेशक तेरे रब की

رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ١٥ إِنَّهُ هُوَ يُبَدِّلُ وَيُعِيدُ ١٦ وَهُوَ الْعَفُورُ

गिरिफ्त बहुत सख्त है¹³ बेशक वोह पहले करे और फिर करे¹⁴ और वोही है बख़्शने वाला

الْوَدُودُ ١٧ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ١٨ فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ١٩ هَلْ أَتَكَ

अपने नेक बन्दों पर प्यारा अर्श का मालिक इज्जत वाला हमेशा जो चाहे कर लेने वाला क्या तुम्हारे पास

حَدِيثُ الْجُنُودِ ٢٠ فَرَعُونَ وَشُؤد ٢١ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي

लश्करों की बात आई¹⁵ वोह लश्कर कौन फिरऔन और समूद¹⁶ बल्कि¹⁷ काफ़िर झुटलाने में

7 : कुरसियां बिछाए और मुसलमानों को आग में डाल रहे थे 8 : शाही लोग बादशाह के पास आ कर एक दूसरे के लिये गवाही देते थे कि उन्होंने ने ता'मीले हुक्म में कोताही नहीं की, ईमानदारों को आग में डाल दिया। मरवी है कि जो मोमिन आग में डाले गए **اللَّهُ** तआला ने उन के आग में पड़ने से कब्ल उन की रूहें कब्ज़ फ़रमा कर उन्हें नजात दी और आग ने खन्दक के कनारों से बाहर निकल कर कनारे पर बैठे हुए कुफ़र को जला दिया। फ़ाएदा : इस वाकिए में मोमिनीन को सब्र और अहले मक्का की ईज़ा रसानियों पर तहम्मल करने की तरगीब फ़रमाई गई। 9 : आग में जला कर 10 : और अपने कुफ़ से बाज़ न आए 11 : आखिरत में बदला उन के कुफ़ का 12 : दुनिया में कि उसी आग ने उन्हें जला डाला, येह बदला है मुसलमानों को आग में डालने का। 13 : जब वोह ज़ालिमों को अज़ाब में पकड़े। 14 : या'नी पहले दुनिया में पैदा करे फिर क़ियामत में आ'माल की जज़ा देने के लिये मौत के बा'द दोबारा ज़िन्दा करे। 15 : जिन को काफ़िर, अम्बिया **السّلام** عَلَيْهِمْ सलّोतु अल्लोहि वसलّم आप की उम्मत के। 16 : जो अपने कुफ़ के सबब हलाक किये गए। 17 : ऐ सय्यिदे आलम !

سَكْدِيْبٍ ۱۹) وَاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۲۰) بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيْدٌ ۲۱) لَا

हैं¹⁸ और **अल्लाह** उन के पीछे से उन्हें घेरे हुए है¹⁹ बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला कुरआन है

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۲۲)

लौहे महफूज़ में

﴿اياتها ۱﴾ ﴿سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ ۳۶﴾ ﴿رُكُوْعُهَا ۱﴾

सूरए तारिक मक्किय्या है, इस में सतरह आयतें और एक रकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَالسَّيِّءَاتِ وَالطَّارِقِ ۱) وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۲) النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۳)

आस्मान की कसम और रात को आने वाले की² और कुछ तुम ने जाना वोह रात को आने वाला क्या है खूब चमक्ता तारा

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّسَّآ عَلَيْهَا حَافِظٌ ۴) فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۵) خُلِقَ

कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो³ तो चाहिये कि आदमी गौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया⁴ जस्त

مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۶) يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۷) إِنَّهُ عَلَى

करते (उछलते हुए) पानी से⁵ जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से⁶ बेशक **अल्लाह** उस के

رَاجِعِهِ لَقَادِرٌ ۸) يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۹) فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا

वापस कर देने पर⁷ कादिर है जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी⁸ तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न

18 : आप को और कुरआने पाक को जैसा कि पहले काफ़िरों का दस्तूर था **19** : उस से उन्हें कोई बचाने वाला नहीं। **1** : "सूरतुतारिक" मक्किय्या है, इस में एक रकूअ, सतरह आयतें, इक्सठ कलिमे, दो सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। **2** : या'नी सितारे की जो रात को चमक्ता है। शाने नुज़ूल : एक शब सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत में अबू तालिब कुछ हदिय्या लाए, हज़ूर उस को तनावुल फ़रमा रहे थे इस दरमियान में एक तारा टूटा और तमाम फ़जा आग से भर गई, अबू तालिब घबरा कर कहने लगे : येह क्या है ? सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : येह सितारा है जिस से शयातीन मारे जाते हैं और येह कुदरते इलाही की निशानियों में से है। अबू तालिब को इस से तअज़ुब हुवा और येह सूरत नाज़िल हुई। **3** : उस के रब की तरफ़ से जो उस के आ'माल की निगहबानी करे और उस की नेकी बदी सब लिख ले। हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि मुराद इस से फ़िरिश्ते हैं। **4** : ताकि वोह जाने कि इस का पैदा करने वाला इस को बा'दे मौत जज़ा के लिये जिन्दाने पर कादिर है, पस इस को रोजे जज़ा के लिये अमल करना चाहिये। **5** : या'नी मर्द व औरत के नुत्फ़ों से जो रेहम में मिल कर एक हो जाते हैं। **6** : या'नी मर्द की पुशत से और औरत के सीने के मक़ाम से। हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया : सीने के उस मक़ाम से जहां हार पहना जाता है और इन्हीं से मन्कूल है कि औरत की दोनों छातियों के दरमियान से। येह भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम आ'जा से बरआमद होती है और इस का ज़ियादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पुशत में आता है और औरत के बदन के अगले हिस्से की बहुत सी रगों में जो सीने के मक़ाम पर हैं नाज़िल होता है, इसी लिये इन दोनों मक़ामों का ज़िक्र खुसूसियत से फ़रमाया गया। **7** : या'नी मौत के बा'द जिन्दगी की तरफ़ लौटा देने पर **8** : छुपी बातों से